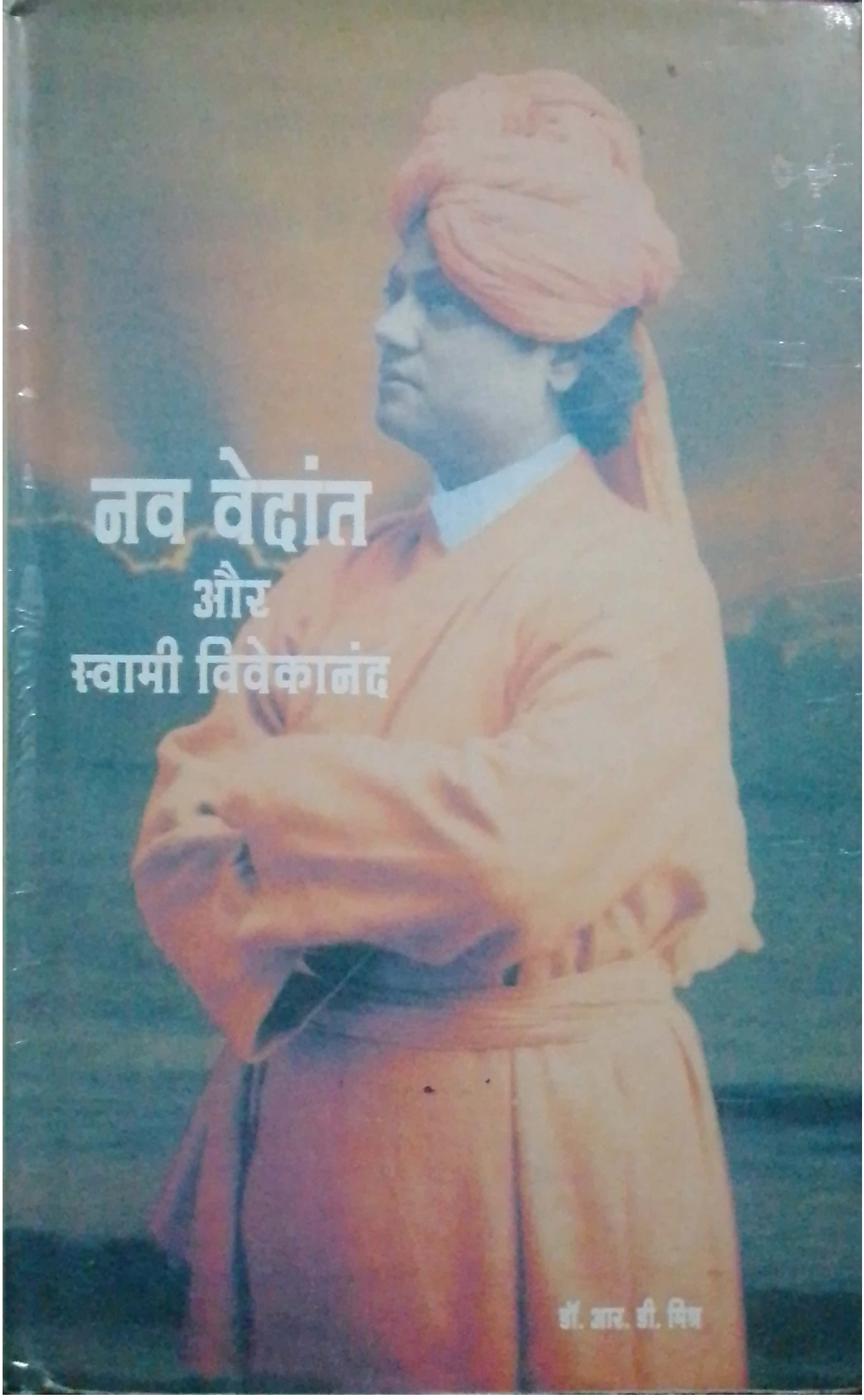

Scanned with OKEN Scanner

नव वेदांत और स्वामी विवेकानंद

© प्रकाशक

ISBN - 81-88289-12-4

प्रथम संस्करण : 2005

मूल्य : 180/-

प्रकाशक :
विश्वविद्यालय प्रकाशन, सागर
247, जवाहरगंज,
सागर-470002 (म.प्र.)
✆ 07582-243598

लेजर कम्पोजिंग :
एक्टिव कम्प्यूटर्स, सागर (म.प्र.)
✆ 503225

मुद्रक :
बुकमैन प्रिन्टर्स, दिल्ली
✆ 9810367902, 30945590

आवरण : 'विवेक ज्योति' से साभार

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

ठाकुर के नरेन	13
नरेन के ठाकुर	38
नवोन्मेष की पीठिका : आलोक की किरण	60
वेदांत दर्शन : चिंतन की ऊष्मा	79
धरती की सम्वेदना : वेदांत की ध्वनि	103
शेष लेखा	126

Scanned with OKEN Scanner

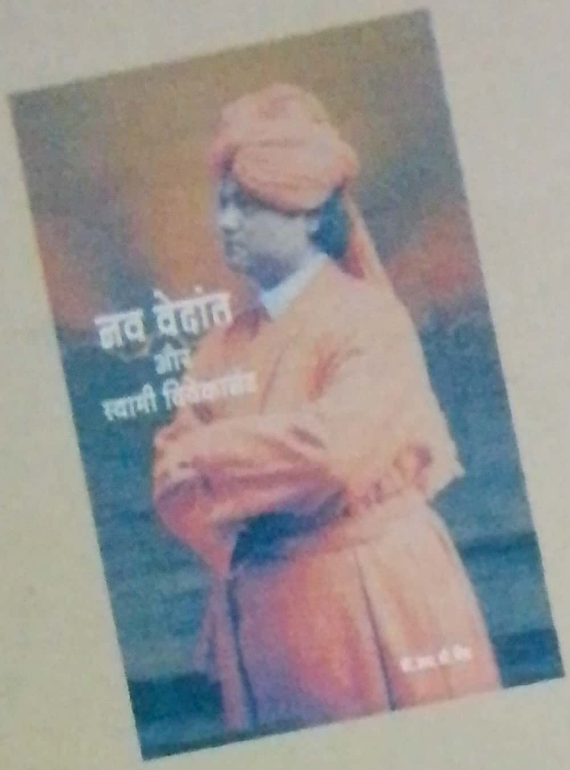

"पुराना धर्म कहता है कि नास्तिक वह है जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करता।
मेरा नया धर्म कहता है कि नास्तिक वह है जो अपने आप पर विश्वास नहीं करता।
विश्वास, विश्वास, एक क्षण का विश्वास अनेक विश्वासों का सृजन करता है।"

- स्वामी विवेकानंद

Scanned with OKEN Scanner

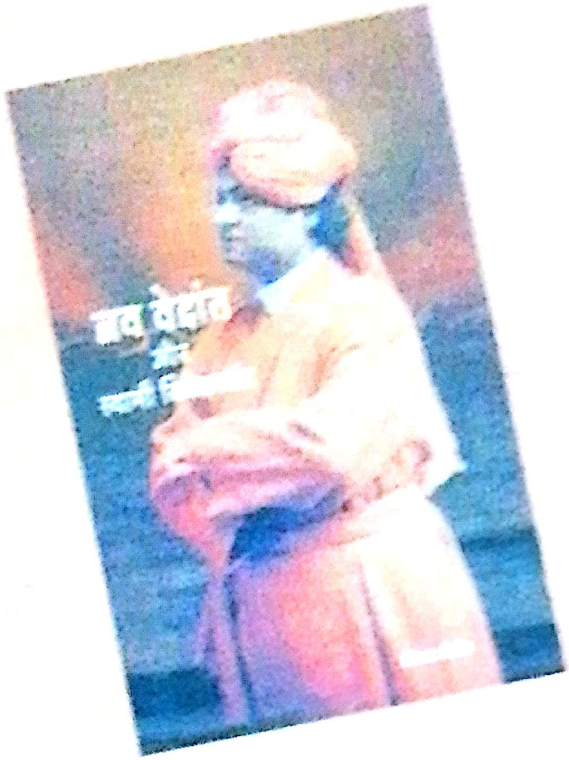

"पुराना धर्म कहता है कि नास्तिक वह है जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करता।
मेरा नया धर्म कहता है कि नास्तिक वह है जो अपने आप पर विश्वास नहीं करता।
विश्वास, विश्वास, एक क्षण का विश्वास अनंत विश्वासों का सृजन करता है।"

– स्वामी विवेकानंद